अध्याय - 9

कोष्टा समुदाय की सूचना आवश्यकताएं : सर्वेक्षण एवं विश्लेषण

"प्रस्तुत अध्याय में सूचना खोज व्यवहार का अभिप्राय, आवश्यकता, यूजर अध्ययन, सूचना स्त्रोतों के प्रकार, कोष्टा समुदाय की सूचना आवश्यकता के स्त्रोत, सूचना के उपयोग में संभाव्य कठिनाइयां, उत्पाद की विक्रय विधि, वित्तीय सहायता प्राप्त करने के स्त्रोत एवं उनकी सूचना आवश्यकताएं का अध्ययन किया गया है ।"

अवधारणा

पुस्तकालय एक संगठन सेवा के रूप में वर्षों पुरानी सांस्कृतिक विरासत की संरक्षण और संप्रेषण के माध्यम से मनुष्य और उसकी सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। इनके सेवा लेने वाले संगठन की धुरी हैं, जिसके चारों ओर पुस्तकालय के सभी कार्य निहित है। चूंकि यह सामाजिक विज्ञान की एक नई शाखा है जिसके उपयोग करने वाले की आवश्यकता, व्यवहार और उद्देश्यों के प्रणाली की और विस्तृतअनुसंधान की आवश्यकता है । चूंकि उपयोग करने वाला किसी भी सूचना प्रणाली का मुख्य अंग होता है । उपयोगकर्त्ता विभिन्न दृष्टिकोण, व्यवहार और रूचि के होते हैं, इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि पुस्तकालय व्यवसायियों को वास्तविक उपयोग करने वाले की आवश्यकताओं को जानना चाहिए, ताकि उनके तरीके और आवश्यकताओं के पूर्ति के साधन का पता लगाया जा सके । सूचना खोज व्यवहार एक नवीनतम अध्ययन क्षेत्र है । जिसमें सूचना की आवश्यकता, सूचना के प्रकार, सूचना के आवश्यकता का उद्देश्य, सूचना कैसे प्राप्त होते हैं, मूल्यांकन और उपयोगिता, आवश्यकताओं के पहचान के तरीके और उनको संतुष्ट करना निहित है ।

सूचना खोज व्यवहार-आशय

सूचना खोज व्यवहार संक्षिप्त वाक्यांश तीन शब्दों सूचना, खोज और व्यवहार से मिलकर बना है । प्रत्येक शब्द का अपना अलग अर्थ और परिभाषा है । इनका अर्थ समझने के लिए प्रत्येक शब्दों को जानना आवश्यक है ।

सूचना :-

सूचना शब्द लेटिन भाषा के "फार्मासियों" और "फार्मा" शब्दों से लिया गया है। संयुक्त रूप से दोनों शब्द किसी चीज का आकार व पद्धति निर्माण को व्यक्त करते हैं ।

न्यू वेबस्टर डिक्शनरि ऑफ इंगलिश लेन्ग्विज् ''सूचना'' की परिभाषा इस प्रकार परिभाषित करता है, ''लिखित में या शब्द द्वारा समाचार या ज्ञान का संचारण, तथ्य अथवा आंकड़े, निर्देश या अध्ययन से प्राप्त ज्ञान अथवा किसी भी तरह से एकत्रित ज्ञान सूचना कहलाता है ।''

शोयब् अहसन और आर. डी. मेहेला के अनुसार, ''सूचना शब्द निरीक्षण, अध्ययन अनुभव या निर्देश से ग्रहण किया गया ज्ञान का संदेश को संदर्भित करता है ।''

उपर्युक्त परिभाषाएं निम्नांकित तर्क प्रदान करती है -

- ज्ञान का संचार, निरीक्षण, अध्ययन अथवा अनुभव से ग्रहण किया जाता है ।

- समाचार या ज्ञान का आदान-प्रदान शब्दों, लेखन, तथ्य अथवा आंकड़ा से प्राप्त होता है।

- ज्ञान अध्ययन या निर्देश से ग्रहण किया जाता है ।

चूंकि सूचना का अर्थ कई प्रकार से विविध संदर्भों में समझा जाता है । परंतु सर्वमान्य परिभाषा का अभाव है यद्यपि कई लोगों द्वारा सूचना की परिभाषा देने का प्रयास किया जा रहा है :- [21, 45]

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान की ए. एल. ए. ग्लासरी में सूचना को इस तरह परिभाषित किया गया है - ''समस्त विचारों, तथ्यों और मस्तिष्क की काल्पनिक कार्यों को जिन्हें औपचारिक या अनौपचारिक रूप से आकृति प्रदान करने के लिए संप्रेषित, अंकित, प्रकाशित अथवा वितरित किया जाता है ।''

इडवर्ड्स के मुताबिक, ''सूचना किसी भी नियंत्रण, प्रणाली का अत्यावश्यक अंग है।

प्रो. जी. भट्टाचार्य के शब्दों में, ''सूचना एक प्रकार से संदेश का सुव्यवस्थित विचारों या उसे स्वीकृत या स्वीकार योग्य विकल्प है ।''

उपयोग करने वाले अध्ययन अनुसंधान के संदर्भ में टी. डी. विल्लसन कहते हैं कि, ''सूचना एक प्रकार से भौतिक अस्तित्व या किसी घटना विषय को संचार के माध्यम से संदेश

को स्थानांतरित किया जाता है या वास्तविक आंकड़े को निश्चित रूप से आलेख या मौखिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है ।''

उपर्युक्त परिभाषाएं निम्न बातें स्पष्ट करती है :-

- यह तथ्यों और विचारों का क्रमबद्ध ढांचा है जिसे औपचारिक या अनौपचारिक माध्यमों से सूचना का प्रकाशन या वितरण किया जाता है ।
- यह मानव मस्तिष्क के क्रिया-कलाप की परिणिती है ।
- यह संप्रेषित संदेश है ।
- घटित होने वाली घटना को मौखिक रूप से संप्रेषण करना है ।

इस प्रकार सूचना शब्द की सार रूप में निम्न परिभाषा दी जा सकती है -

यह क्रमबद्ध रूप से विचारों तथ्यों और मानव मस्तिष्क के क्रिया-कलापों की देन है जिसे औपचारिक या अनौपचारिक रूप से संकलन या वितरण किया जाता है ।

खोज :-

कन्साइस आक्सफोर्ड डिक्शनरि के अनुसार, ''सीकिंग अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ खोजना या जांच पड़ताल अथवा खोज-बीन करना है ।''

सी. सी. कुल्थऊ के अनुसार, ''सूचना की खोज प्रायोगिक रूप से निर्माण की एक प्रक्रिया है ।''

न्यू वेब्स्टर डिक्शनरि ऑफ इंगलिस लेनग्विज् के अनुसार, ''सीकिंग का अर्थ खोज करना या अन्वेषण करना है ।''

इस प्रकार सूचना खोज का अर्थ ''विभिन्न संसाधनों से सूचना का संकलन और ग्रहण करने की प्रक्रिया है । इसे प्रकाशित सामग्री के अध्ययन या साथियों के साथ वार्ता या दोनों तरीके से किया जा सकता है ।'[45,46]

व्यवहार :-

न्यू वेब्स्टर डिक्शनरि ऑफ इंगलिस लेनग्विज् के अनुसार, ''व्यवहार शब्द का अर्थ

व्यवहार करने या कार्य करने की रीति है, कार्य का तरीका है ।''

ब्रुस क्रिस्टाइ के अनुसार, ''सूचना व्यवहार'' शब्द को इस प्रकार परिभाषित कर सकतें हैं - सूचना व्यवहार का सार्वभौमिक विषय से संबंधित और केवल यदि, सूचना के विषयों की आवृत्ति के बारे में आमने-सामने संचार, दूरभाष संचार, लिखित संचार, अन्य संचार, अन्य व्यवहार के संपर्क में इसका प्रभाव क्षेत्र पूछने और इसके सुव्यवस्थित क्षेत्र से है ।

उपर्युक्त विवेचन से सूचना और खोज व्यवहार के अवधारणा से निष्कर्ष निकलता है कि यह कार्य के व्यवहार, सूचना स्त्रोत के चयन की प्रक्रिया और उसके विषय की आवृत्ति से संबंधित है ।

फिर भी, सामूहिक रूप से सूचना खोज व्यवहार का अभिप्राय पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान व्यवसायियों के लिए अनुसंधान का नवीन क्षेत्र है । अभी तक इसकी सर्वमान्य और विश्वसनीय परिभाषा विकसित नहीं हुई है । प्रयोग के तौर पर कुछ परिभाषाएं हैं जिसका पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के साहित्य में प्रचलन है, उन प्रचलनों की विश्लेषण और चर्चा आवश्यक है ।

इथेल आस्ट्रे ने सुझाव के तौर पर सूचना खोज व्यवहार की परिभाषा दी है, उनके अनुसार- ''एक ऐसा क्षेत्र है जिससे अध्ययन का निर्माण होता है वह उसकी आवश्यकताएं, सूचना के प्रकार और उसके कारणों से संबंधित होती है कि कैसे सूचना को प्राप्त किया जाता है, मूल्यांकन व उपयोग और इन आवश्यकताओं को कैसे पहचाना और संतुष्ट हुआ जा सकता है ।''

एम. एस. श्रीधर के अनुसार, ''सूचना खोज के कारण व उद्देश्य, ढूंढ़े गए सूचना की प्रकृति व प्रकार, अभिगमन के मार्ग व साधन, खोज, पहचान व सूचना की प्राप्ति, संचार व्यवहार एवं इसका प्रयोग और प्राथमिक पुस्तकालय के साथ परस्पर संबंध स्थापित करने के रूप में अध्ययन है ।''

अतः सूचना खोज व्यवहार वह तरीका है जिसके द्वारा पाठक अपने आप को सूचना के वातावरण से संबंध स्थापित करता है । यह वह प्रक्रिया है जिसमें पाठक सूचना के वातावरण से मिलता है । इस प्रकार सूचना खोज व्यवहार ज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र है जो पाठकगणों को अध्ययन से जोड़ता है, उनकी सूचना आवश्यकता, खोज, प्राप्त करने के कारण व तरीके, संचार माध्यम सहित तीव्रता के साथ उपयोग, प्राप्त सूचना से संतुष्टि एवं असंतुष्टि और सूचना से संबंधित

उपयुक्त व प्रासंगिक घटकों का अध्ययन है । [21,45]

आवश्यकता :-

आज से 30-40 वर्ष पहले न तो सूचना की इतनी अधिकता थी और ना ही आज जितना विषय क्षेत्र है उतना विषय हुआ करता था । प्रारंभ में कुछ निश्चित विषय क्षेत्र में शोध कार्य हुआ करता था । शनैः-शनैः अनुसंधान का तरीका बदलने लगा और मिशन / प्रोजेक्ट उन्मुख अनुसंधान होने लगा । इस प्रकार के शोध एक निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए होता था ।

अतः अलग-अलग मिशन उन्मुख अनुसंधान होने की वजह से सभी का शोध अलग-अलग रहता था । अलग-अलग विषय क्षेत्र होने से उनके सूचना की आवश्यकता अलग-अलग थी, फलस्वरूप उनके खोज व्यवहार में भी विविधता थी अर्थात् उनको अनुसंधान कार्य के निष्पादन के लिए अलग-अलग सूचना व्यवहार के पैटर्न की आवश्यकता पड़नी शुरू हो गई ।

सूचना खोज व्यवहार में सूचना को मुख्यतः तीन तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है:-

1- प्रश्न विधि

2- व्यक्ति साक्षात्कर विधि

3- अनुसूची विधि

सूचना खोजने का तरीका प्रत्येक समूह के लोगों का अलग-अलग होता है । इसका सबसे प्रमुख वजह उनकी अलग-अलग आवश्यकताएं का होना है । इस प्रकार यह ज्ञान के कारण ही पैदा होती है और यह मानव समाज द्वारा सूचना ग्रहण करने के बाद सूचना ज्ञान बन जाता है। ज्ञान पाने, सीखने, निर्णय होने की प्रवृत्तियां सूचना खोज की ओर ले जाती है । किसी समस्या से निजात पाने के लिए इसे खोजी जाती है, इसे खोजकर परीक्षण कर उपयोग में लाया जाता है । सूचना खोज की सभी परिस्थितियों में सूचना का प्रवाह होता है जो उपयोगकर्त्ता को अज्ञानता से ज्ञान एवं अनिश्चितता से निश्चितता की ओर ले जाती है ।

आवश्यकता के प्रकार :-

टी. डी. विल्सन के अनुसार, मनोवैज्ञानिकों ने आवश्यकता के प्रकार को तीन श्रेणियों में विभक्त किया है, जैसे- मानव शरीर की आवश्यकता, मनोवैज्ञानिक आवश्यकता तथा ज्ञान की आवश्यकता । उपयोगकर्त्ताओं की आवश्यकता आधारीय ज्ञान की आवश्यकता की भांति होता है क्योंकि उनमें योजना बनाने तथा कोशलों को सीखने की आवश्यकता समाहित होता है । फिर भी ये मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं के साथ घनिष्ट रूप से जुड़े हैं । [36]

बी. येट्स ने मानवीय आवश्यकताओं को चार भागों में विभाजित किया है :-

1- प्रयोग सिद्ध ज्ञान

2- व्यक्तिगत मानव

3- संयुक्त मानव आवश्यकता, तथा

4- विविधता

'' प्रयोग सिद्ध ज्ञान'' विज्ञान और तकनीकी का ऐसा क्षेत्र है जो अंततः मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक है । उदाहरणार्थ - लोगो को ऊर्जा के नए स्त्रोत विकसीत करना चाहिए तथा बिमारियों, खाद्य आपूर्ति, प्राकृतिक आपदाओं से बचाव जैसे समस्याओं को हल करना चाहिए ।

'' व्यक्तिगत मानव आवश्यकता '' व्यक्तिगत परिचय के लिए एक खोज है जो कि व्यक्तिगत जांच का एक प्रमुख आधार है । इस मानवीय आवश्यकता की संतुष्टि हेतु साहित्य के विभिन्न रूप तथा संरचना को मानव अनुभवों के आधार पर उपयोगी बनाया जा सकता है।

''संयुक्त मानवीय आवश्यकता'' के विभिन्न प्रतिमान है, जैसे- सामाज शास्त्र, भूगोल तथा इतिहास में विस्तारित क्षेत्र में कुछ अनुशासित समय । पहले सांख्यिकीय विधि उपयोग की जाती है बाद में प्राथमिक स्त्रोत प्रलेखों का अध्ययन आवश्यक माना जाता है ।

''विविध आवश्यकताएं'' शारीरिक /मानसिक शिथिलता, संदेह, असफलता, निराशा, बेचैनी आदि से निजात पाने की आवश्यकता का अध्ययन को कहा जाता है ।

अब्राहम मास्लो ने मानव अभिप्रेरणा के सिद्धांत का वर्णन करते हुए कहा है कि मानव उत्साह एक सिद्धांत है जो अपनी सामर्थ्य के अनुसार निम्नलिखित आवश्यकताओं को व्यवस्थित किया है :-

1- शारीरिक

2- सुरक्षित

3- सामाजिक

4- आदर्श एवं

5- स्व यथार्थ आवश्यकताएं

आवश्यकताओं के उपर्युक्त प्रकारों के अतिरिक्त गिरिजा कुमार ने आवश्यकता के स्वरूपों का उल्लेख किया है जिसमें सूचना को व्यक्तिगत आवश्यकता के रूप में पहचान किया गया है। [36]

सूचना और आवश्यकताएं संयुक्त शब्द के कु छ परिभाषाएं सूचना आवश्यकता के रूप में सूचना विशेषओं द्वारा विकसित किया गया है ।

गिरजा कुमार के अनुसार, ''सूचना आवश्यकताओं को इसके उपयोग करने वाले की व्यक्तिगत आवश्यकता के रूप में पहचान जाता है, जिसे व्यक्तिगत सूचना पद्धति के द्वारा संतुष्ट होना चाहिए ।''

वी. गुहा ने, ''सूचना आवश्यकता को सूचना प्राप्त करने के लिए विविध आवश्यकताओं तथा सम्पर्को के संगठित विचार के रूप में उल्लेख किया है ।''

इस संदर्भ में ऐसा माना जा सकता है कि व्यक्तिगत सूचना आवश्यकताएं उनके रूचि के विविध क्षेत्रों में अपनी पारंपरिक व्यवसाय हेतु अपने आपको तैयार रखते हैं । [88]

प्रयोक्ता (यूजर) अध्ययन

प्रयोक्ता अध्ययन की उत्पत्ति ज्ञान के साथ होती है जो की प्रयोक्ता आवश्यकताएं तथा सूचना उपयोगों की समझ से प्रभावशाली सूचना पद्धति निर्मित करने का एक प्रयास है। यद्यपि प्राथमिक रूप से विधिशास्त्र सूचना सेवाओं की प्रगति हेतु मार्ग दर्शन के रूप में प्रयोक्ता

अध्ययन के प्रमाणिकता पर प्रश्न खड़ा कर देता है। विषय साहित्य यह दिखाता है कि प्रयोक्ताओं पर अध्ययन का स्वरूप 1940 से पूर्व का है, इसके अध्ययन में निरन्तर वृद्धि हो रही है। 1976 में यूनाइटेड किंगडम में सी. आर. यू. एस. (प्रयोक्ता अध्ययन पर शोध के लिए केंद्र) की स्थापना प्रयोक्ता अध्ययनों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण कार्य है जो इस विषय पर विशिष्ट महत्व रखता है।

प्रयोक्ता अध्ययन के महत्व को स्वीकारने के पश्चात् विविध सूचना वैज्ञानिकों ने इसे इस तरह परिभाषित किया है -

गिरजा कुमार के अनुसार, "सूचना प्रयोक्ता तथा सूचना पद्धति के मध्य वैकल्पिक संबंधो की खोज निदान सूचक अध्ययन है।"

लाहिड़ी और चौधरी के अनुसार, " प्रयोक्ता अध्ययन अधिकतर समझने, उचित कारण बतलाने, स्पष्टीकरण करने तथा पुस्तकालय उपयोग हेतु प्रेरित करने और अंततः यहां तक कि पुस्तकालय और उसके पाठक से संबंधित संदेश की प्रक्रिया के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।"

सी. आर. यू. एस. (प्रयोक्ता अध्ययन पर अनुसंधान केंद्र) के अनुसार, " ज्ञान का बहुआयामी अनुशासित क्षेत्र, सूचना पद्धति एवं सेवाएं के लिए प्रयोक्ता व गैर प्रयोक्ता के व्यवहार का अध्ययन है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि -

- यह एक निदान सूचक अध्ययन है जिसमें प्रयोक्ता और सूचना पद्धति के मध्य संबंधों को खोजा जाता है।
- यह एक मूल्यांकन की प्रक्रिया है जिसमें पद्धति के प्रदर्शन एवं संचार प्रक्रिया के बारे में प्रदाय ज्ञान के माप को स्पष्ट करता है।
- यह ज्ञान का एक बहुअनुशासन क्षेत्र है जिसमें प्रयोक्ता तथा गैर प्रयोक्ता के सूचना पद्धति और सेवाएं के व्यवहार का अध्ययन कराता है।

यह देखा गया है कि प्रयोक्ता अध्ययन न सिर्फ वास्तविक या संभावित प्रयोक्ता तक सीमित होती है बल्कि यह गैर प्रयोक्ताओं के लिए भी बना है। यहां तक कि विकसीत

राष्ट्र अमेरिका जैसे में लगभग 70% जनसंख्या इस श्रेणी में है ।

ऐसे गैर प्रयोक्ता वे भी हो सकते हैं जो मानसिक, शारीरिक और सामाजिक कारणों की वजह से सूचना का उपयोग करने में असमर्थ है या वे व्यवसायी जैसे चिकित्सक, कानूनी सलहकार, सामाजिक कार्यकर्त्ता और हथकरघा जैसे लघु उद्योग के श्रमिक व कामगार अपनी व्यवसायिक व्यस्तता के फलस्वरूप अक्सर सूचना केन्द्रों में नहीं जा पाते हैं । भारत जैसे विकासशील देश में निम्न स्तर की लोगों की संख्या बहुत अधिक है और रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर (कोष्टा) समुदाय का भी इनमें एक महत्वपूर्ण स्थान है । अधिकांशतः पुस्तकालयाध्यक्ष को न सिर्फ सूचना पद्धति से जुड़ा हुआ होना चाहिए बल्कि ऐसे सूचना केंद्रो तथा पुस्तकालयों से संबद्ध होना चाहिए जिनसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बदलाव के साथ साथ देश के स्थायित्व में योगदान संभाव्य हो । [67, 82]

सूचना बहुत मूल्यवान संसाधन है । इसलिए राष्ट्रीय सूचना पद्धति द्वारा देश में नेटवर्किंग स्थापित करके संसाधनों को प्रयोक्ताओं हेतु उसकी अपेक्षित व्यवसायिक और संगठनात्मक संबंद्धता एवं सामाजिक - आर्थिक प्रतिष्ठा के लिए उपलब्ध कराया जा सके । प्रयोक्ता अध्ययन संपूर्ण स्त्रोतों और सेवाओं के विस्तार पर स्पष्ट करने में मदद करता है और उन पद्धति तथा सेवाओं का प्रसार करता है जिनका उपयोग हुआ है ।

संगमेश्वरन् और गोपीनाथ के अनुसार किसी भी प्रयोक्ता अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य ये है :-

1. उपयोग कर्त्ता के सामर्थ्य की पहचान तथा उनको श्रेणी बद्ध करना ।
2. वांछित सूचना स्तर के द्वारा आवश्यक सूचना श्रेणीकरण की पहचान व संचार तंत्र के स्तर तथा प्रकारों के जुड़ाव की पहचान ।
3. प्रभावकारी संसाधनों तथा सेवाओं की पहचान करना ताकि सूचना को विस्तृत रूप में उपलब्ध किया जा सके ।
4. विविध वर्तमान सेवाओं को उनकी उपयोगिता के संदर्भ में मूल्यांकन उपयोग कर्त्ताओं को जब कभी भी जरूरत हो आवश्यकता अनुसार नवीन योजनओं का समावेश तथा परिवर्तन ।

5. उपयोग कर्त्ताओं के पुनर्निवेशन से प्राप्त सूचना पद्धतियों में संपूर्ण प्रगति प्राप्त करना ।

इस प्रकार प्रयोक्ता अध्ययन के महत्व को विशेष रूप से पुस्तकालयों और सूचना केन्द्रों में उपेक्षित नहीं किया जा सकता ।

कोष्टा समुदाय की सूचना से पहुँच

बी. गुहा के अनुसार सूचना पहुँच के मुख्यतः चार प्रकार हैं, वे हैं -

1- चालू /वर्तमान संपर्क

2- दैनिक संपर्क

3- थकाऊ संपर्क

4- नवीन संपर्क

चालू / वर्तमान संपर्क, उपयोग कर्त्ता का वह संपर्क है जहां वह चालू /वर्तमान विकास के उचित स्थिति के बारे में न केवल विशिष्ट क्षेत्र बल्कि कार्य के विस्तृत क्षेत्रों में रूचि बराबर रखता है ।

दैनिक संपर्क, पाठक उपयोग कर्त्ता के लिए कार्य संबंधित सूचना बतलाने का विशिष्ट भाग है ।

थकाऊ संपर्क, विशेष कर सूचना के उस संपर्क को दर्शाता है जहां विशिष्ट विषय क्षेत्र पर कामगार अनुसंधान के नवीन क्षेत्र को पूर्ण करने के लिए प्रारंभ करते है ।

नवीन संपर्क, वह संपर्क है जिसमें कामगार उस क्षेत्र में सूचना ढूंढ़ना चाहता है जिस क्षेत्र में विशेषज्ञ नहीं है ।

रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर (कोष्टा) समुदाय अपने हथकरघा उत्पादों में विशिष्टता के बावजूद अभी भी परंपरागत विधि का अनुसरण कर रहे हैं । वर्तमान स्थिति से सामना करने के लिए यह आवश्यक है इस क्षेत्र की नवीनतम विकास के साथ चलना जरूरी है । यद्यपि हथकरघा उद्योग पूरे देश में क्रियाशील है फिर भी मद्रास, मैसुर एवं महाराष्ट्र के बुनकर रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकरों की अपेक्षा ज्यादा विकसीत है । हथकरघा उद्योग और बुनाई व्यवसाय से संबंधित पुस्तकालय एवं सूचना नेटवर्किंग, अधोसंरचनात्मक सुविधाएं एवं द्वार पहुंच आवश्यक सूचना की अनुपलब्धता

के फलस्वरूप रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर समुदाय को उनके व्यापार से संबंधित अधिकृत सूचनाएं नहीं मिल पाती । अधिकांश बुनकरों में शिक्षा का स्तर न्यून होने की वजह से उनमें विविध प्रलेखीय स्त्रोतों के बारे में चेतन्यता नहीं है और न ही अपने कार्य स्थल से दूर पुस्तकालय में उपलब्ध संबंधित प्रलेखों को वे पढ़ने में समर्थ हैं । अध्ययन से प्रदर्शित हुआ है कि रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर समुदाय पुस्तकालय सेवा को स्वीकारने के इच्छुक है यदि उनके स्थानीय /नजदीक में स्थापना हो तो । इस प्रकार बुनकारों की सूचना आवश्यकताएं के लिए सूचना की पुर्नसंवेष्टन अत्यंत आवश्यक है ।

सूचना स्त्रोतों के प्रकार

वैज्ञानिक, शिल्पकार, तकनीशियन या बुनकर की सूचना मांगों के लिए विविध स्त्रोतों की आवश्यकता होती है । विविध सूचना स्त्रोतों से प्रयोक्ता के सामने यह समस्या होती है कि अपनी आवश्यकताओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण सूचना का चुनाव कैसे करें ? सूचना स्त्रोतों के बारे में जानकारी, उनके क्षेत्र तथा सीमाएं एवं उसकी स्वाभाविक लक्षण व उनसे जुड़े हुए क्षेत्र को समझना अत्यावश्यक एवं महत्वपूर्ण है ।

जे. के. खन्ना के अनुसार सूचना स्त्रोतों को दो वृहत समूहों में श्रेणीकरण किया जा सकता है -

1- प्रलेखीय

2- गैर-प्रलेखीय

बी. गुहा ने प्रलेखीय स्त्रोतों को तीन भागों में श्रेणी बद्ध किया है ।

क- प्राथमिक

ख- द्वितीयक और

ग- तृतीयक

गैर-प्रलेखीय सूचना के स्त्रोत को निम्न दो भागो में बांटा जा सकता है -

क- औपचारिक तथा

ख- अनौपचारिक स्त्रोत

औपचारिक सूचना के स्त्रोतों में सम्मिलित हैं -

- सार्वजनिक उपक्रम
- शासकीय स्थापना
- विद्वत व्यवसायियों
- विश्वविद्यालयों
- औद्योगिक संबंध
- समंक केन्द्रों, तथा
- सूचना केन्द्र

अनौपचारिक सूचना के स्त्रोतों में सम्मिलित है :-

- साथियों एवं नवान्गातुकों से चर्चा करना
- सेमीनार, सम्मेलन आदि में सहभागिता
- यूनिसिस्ट, यूनिडो जैसे अंतर्राष्ट्रिय संगठन

कृष्णकुमार, डी. आर. ग्रोवर, मोहम्मद रियाज, जे. एस. शर्मा सभी ने सूचना स्त्रोतों को उपर्युक्त श्रेणियों में वर्गीकृत किया है । [54, 57]

अधिकांश पुस्तकालय वैज्ञानिकों ने सूचना के प्रलेखीय स्त्रोतों को मुख्यतः तीन समूहों - प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक में वर्गीकृ त किया है । जबकि भारत में पुस्तकालय आंदोलन के जनक डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने निम्न प्रमुख समूहों के अन्दर में विविध प्रलेखीय स्त्रोतों का वर्गीकरण किया है :-

1- परंपरागत

2- नव-परंपरागत

3- अ-परंपरागत, एवं

4- मेटा प्रलेख

परंपरागत प्रलेख, वे प्रलेख हैं जो कि सामान्यतः कागज पर प्राकृतिक भाषा में लेखन, मुद्रण व छपाई के द्वारा प्राप्त होता है । ये उपयोग हेतु अत्यंत प्रचलित प्रलेख है । इनमें पुस्तकें पत्रिकाएं, नक्शा व मानचित्र सम्मिलित है ।

नव-परंपरागत प्रलेख, सूक्ष्म प्रलेखों का नया वर्ग है जैसे कि स्टेनर्डड्स, पेटेंट्स, डाट्रा इत्यादि ।

अ-परंपरगत प्रलेख, गैर प्रलेखीय आकृति परिणाम का अभिलेख है । इनमें श्रव्य-दृश्य, माइक्रोन्फॉरम्स इत्यादि शामिल है ।

मेटा प्रलेख, मानव मस्तिक के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से तुरंत निर्मित कुछ अद्भूत घटनाओं का अभिलेख है । यह संभवतः उपकरण तकनीक, फोटोग्राफी, राडर तकनीक के द्वारा निर्मित सामाजिक घटनाओं का उपकरण के रूप में अभिलेख है ।

डॉ. एस. आर. रंगनाथन के द्वारा बनाये गये श्रेणीकरण में प्रलेख के सूचना विशेषताओं पर विचार नहीं किया गया है । इनमें साधारण पत्रिका और एक अनुक्रमणीकृत पत्रिका के मध्य अंतर न होने से प्रायः यह एक पुस्तक और एक पत्रिका है ।

फिर भी, प्रलेखीय और गैर-प्रलेखीय स्त्रोतों की सूचना हथकरघा बुनकरों के लिए अत्यंत जरूरी है । द्वितीयक प्रलेखीय स्त्रोतों जैसे कि-अनुक्रमणी पत्रिकाएँ, सारांशी पत्रिकाएं, समीक्षाकृत पत्रिकाएं इत्यादि जरूरी नहीं हैं । यद्यपि वह किसी उदेद्श्य हेतु कठिनाई से उययुक्त होता है ।

कोष्टा समुदाय की सूचना आवश्यकता के स्त्रोत

सर्वेक्षण से मिली जानकारी के अनुसार - रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर (कोष्टा) समुदाय अपने परंपरागत बुनाई व्यवसाय से सम्बद्ध सूचना आवश्यकताओं के लिए अधिकांशतः सूचना के निम्न स्त्रोतों पर निर्भर हैं :-

सारिणी क्रमांक - 12

[बुनकर (कोष्टा) समुदाय की सूचना आवश्यकता के स्त्रोत]

क्र.	स्त्रोत (जिन पर वे निर्भर हैं)	प्रतिदर्श आवृति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	ग्रंथालय भ्रमण द्वारा	300	07	2.33
2	सहकारी कार्यालयों से	300	25	8.33
3	समूह परिचर्चा से	300	278	92.66
4	साहित्य अवलोकन से	300	09	3.00
5	विज्ञापनों द्वारा	300	23	7.66
6	प्रशिक्षण और कार्याशालाओं में उपस्थिति के द्वारा	300	45	15.00
7	वित्त एजेंसियों से सलाह पर	300	118	39.33
8	सूचना केन्द्र से	300	03	1.00

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य के लिए बुनकर (कोष्टा) समुदाय की सूचना आवश्यकता के उन स्त्रोतों की जानकारी हासिल करने के लिए जहां से वास्तव में वे सूचना प्राप्त करते हैं। साक्षात्कार / प्रश्नावली अनुसूचि हेतु आठ मुख्य स्त्रोतों की पहचान कर प्रतिदर्श बुनकरों से सर्वेक्षण द्वारा उक्त जानकारी एकत्रित की गई ।

उपर्युक्त सारिणी क्रमांक 12 से प्रदर्शित होता है कि कुल 300 प्रतिर्दश बुनकरों में केवल 07 (2.33%) उत्तरदाता बुनकरों ने अपने व्यवसायिक सूचना प्राप्ति के स्त्रोत के रूप में ग्रंथालय का भ्रमण करते हैं । इससे यह संकेत स्पष्ट होता है अध्ययन क्षेत्र के कोष्टा समुदाय के लोगों में ग्रंथालय सेवा के प्रति जनजागृति नहीं है । प्रत्यक्ष चर्चा में विदित हुआ कि शिक्षित बुनकर जो ग्रंथालय के बारे में भिज्ञ हैं वे अपने स्थानीय /क्षेत्रीय स्तर पर ग्रंथालय नहीं होने की वजह से इच्छा रखते हुए भी जानकारी प्राप्त करने से वंचित है । 25(8.33%) प्रतिवादी बुनकर ऐसे हैं जो सरकारी कार्यालयों के द्वारा सूचनाएं प्राप्त करते हैं । इससे यह अनुमान लगाया

जाता है कि क्षेत्र के बुनकर सरकारी कार्यालयों पर अपने बुनाई कार्य से संबंधित सूचनाएं प्राप्त करने के लिए बहुत कम निर्भर हैं। मौखिक चर्चा में यह बात सामने आयी कि समय पर सरकारी अधिकारी/कर्मचारी वांछित जानकारी बुनकरों को सुलभ नहीं करवाते साथ ही संबंधित कार्यालय के शासकीय सेवक क्षेत्र का दौरा कम ही करते हैं। इसी प्रकार उक्त सारिणी के बिंदु क्रमांक 03 में समूह परिचर्चा पर दर्शित आंकड़े से स्पष्ट होता है रायगढ़ क्षेत्रीय कोष्टा समुदाय के बुनकर कार्य में संलग्न लोग अपनी बुनकरी व्यवसाय से संबंधित सूचना प्राप्ति के प्रमुख स्त्रोत के रूप में समूह परिचर्चा पर आश्रित हैं, कुल 278 (92.66%) प्रतिदर्श बुनकरों ने सूचना प्राप्ति के इस अनौपचारिक स्त्रोत का उपयोग करना बतलाया है। कुल 09 (3%) बुनकर उत्तरदाताओं द्वारा सूचना के स्त्रोत के लिए साहित्य का अवलोकन किया जाना सर्वे में पाया गया। इससे यह विदित होता है कि क्षेत्र के बुनकरों को उनके बुनाई व्यवसाय से संबंधित साहित्य प्रकाशनों की जानकारी नहीं है। कुछ बुनकर जानकारी रखते भी हैं तो उसकी प्राप्ति में कठिनाई महसूस करतें है एवं मौखिक चर्चा से ज्ञात हुआ कि बुनकरों की दयनीय आर्थिक स्थिति इसकी प्रमुख वजह है। 23 (7.66 %) प्रतिदर्श बुनकर अपने बुनाई कार्य हेतु सूचना स्त्रोत के रूप में विज्ञापन माध्यमों पर निर्भर होना बतलाया है। इसी प्रकार से सर्वेक्षण के आंकड़े प्रदर्शित करता है कि अध्ययन क्षेत्र के कुल 45 (15%) उत्तरदाताओं ने विभिन्न प्रशिक्षण व कार्यशालाओं में उपस्थित होकर अपने व्यवसाय संबंधी आवश्यक सूचनाएं प्राप्त करते हैं जबकि 118 (39.33 %) प्रतिदर्श उत्तरदाता बुनकरों ने वित्त एजेंसियों से सलाह मशविरा पर तथा 3 (1 %) बुनकरों का सूचना केन्द्र पर सूचना के स्त्रोत के रूप में उपयोग व निर्भर करना प्रदर्शित हुआ है।

इस प्रकार उपर्युक्त सर्वेक्षण आंकड़ों से ज्ञात हुआ है कि जांजगीर - चांपा एवं रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर (कोष्टा) समुदाय के लोग अपने बुनाई व्यवसाय से संबंधित सूचना प्राप्त करने के प्रमुख स्त्रोत के रूप में समूह परिचर्चा पर निर्भर करते हैं जो कि सर्वेक्षित सूचना के स्त्रोतों के क्रम की दृष्टि से प्रथम है एवं वित्त एजेंसियों से सलाह व प्रशिक्षण कार्यशालाओं में उपस्थित होकर सूचना प्राप्त करने के स्त्रोत क्रमशः दूसरा व तीसरा क्रम में हैं। इसी प्रकार सरकारी कार्यालयों से, विज्ञापनों के द्वारा ., साहित्य अवलोकन से, पुस्तकालय भ्रमण एवं सूचना केन्द्र से सूचना प्राप्त करने के स्त्रोत क्रमशः चौथा, पांचवा, छठवां, सांतवां एवं आठवां स्थान में हैं। अतः सर्वेक्षण से मिली जानकारी और आंकड़े के विश्लेषण से स्पष्ट है कि बुनकरों के मध्य में उनकी सूचना आवश्यकताओं के लिए प्रलेखों के विविध स्त्रोतों को सशक्त करने हेतु पक्का/ स्थायी नियम

का अभाव है । कच्चा सामग्री, तकनीक, उद्योग व उत्पादों के देख-रेख, उत्पादों के विपणन, वित्तीय एजेंसियों और प्रशिक्षण सुविधाएं संबंधी सूचना आवश्यकता के लिए ऊपर वर्णित विभिन्न स्त्रोतों पर बुनकर (कोष्टा) समुदाय आश्रित हैं ।

सूचना के उपयोग में संभाव्य कठिनाई

रायगढ़ क्षेत्रीय कोष्टा समुदाय के बुनकरी कार्य में संलग्न लोग अपने व्यवसाय से संबंधित आवश्यक सूचनाएं औपचारिक या अनौपचारिक स्त्रोतों से ढूंढ़ते हैं । परंतु वे कुशल व्यवसायियों पर ज्यादा निर्भर रहतें हैं और कुशल व्यवसायी इन्हें अधिकृत सूचनाएं प्रदान नहीं करते हैं । संबंधित शासकीय कार्यालयों के द्वारा इन्हें सम्यक् सहायता नहीं मिल पाती है और इनके स्थानीय स्तर पर सूचना के औपचारिक स्त्रोत भी विद्यमान नहीं है । फलस्वरूप कोष्टा समुदाय अपने बुनकरी कार्य के अनेक पहलुओं पर कठिनाईयां महसूस करते हैं ।

सर्वेक्षण से मिली जानकारी के मुताबिक इन कठिनाईयों को निम्नानुसार सारिणी में व्यक्त किया जा सकता है :-

सारिणी क्रमांक - 13

(बुनाई व्यवसाय को चलाने में संभावित कठिनाईयां)

क्र	पहलू / विषय	आवृति	उत्तरदाता	प्रतिशत	कठिनाईयां
1	कच्चे माल पर	300	285	95%	बाजार की अनुपलब्धता एवं ऊँचे दाम
2	प्रक्रिया पर	300	120	40%	उन्नत उपकरणों की कमी से उत्पादन में अत्यधिक शारीरिक श्रम एवं समय व्ययित
3	रंगाई पर	300	175	58.33%	स्थानीय स्तर में रंगाई केन्द्र का अभाव
4	धागा कटाई पर	300	-	-	इस पर वे कार्य नहीं करते ।
5	टाई वर्क पर	300	80	26.66%	विशिष्ट कार्य होने से अधिक मानव शक्ति लगता है ।

क्र	पहलू / विषय	आवृति	उत्तरदाता	प्रतिशत	कठिनाईयां
6	डिजाईनिंग पर	300	165	55%	उपभोक्ताओं की विविध आवश्यकताओं को निर्धारित करना असंभव है ।
7	बाजार मांग	300	260	86.66%	स्थानीय बाजार की अनुपलब्धता (उत्पादों को ऊंचे कीमत पर बिक्री हेतु)
8	विक्रय स्त्रोत पर	300	170	56.66%	उनके उत्पादों की प्राप्ति हेतु व्यवसायियों में प्रतिस्पर्धा एवं थोक विक्रेता का अभाव है ।
9	उपकरण एवं औजार पर	300	235	78.33%	बना-बनाया (तैयार)उपकरण बाजार में अनुपलब्ध,बढ़ाई से प्राप्त करने में अधिक समय व्ययित ।
10	शासकीय सहायता	300	252	84%	शासकीय कार्यालय सहयोग नहीं देते और सहायता राशि पाने में रूकावट आती है ।
11	बुनाई प्रशिक्षण	300	200	66.66%	प्रशिक्षण केन्द्रों में दक्ष प्रशिक्षक नहीं हैं ।
12	निर्यात पर	300	99	33%	कहां और कैसे निर्यात हो इसकी जानकारी नहीं है ।
13	गुणवत्ता नियंत्रण पर	300	25	8.33%	साक्षरता और शिक्षा की कमी ने बुनकरों में गुणवत्ता नियंत्रण, विज्ञापन एवं पेटेन्ट की अवधारणा के बारे में अनभिज्ञ बना दिया है ।
14	विज्ञापन पर	300	18	6%	
15	पेटेन्ट पर	300	20	6.66%	

कोष्टा समुदाय की सूचना आवश्यकता

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य के दृष्टिगत रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर (कोष्टा) समुदाय की वर्तमान व वास्तविक सूचना आवश्यकताओं को जानने के लिए प्रश्नावली / साक्षात्कार अनुसूची में विविध पहलुओं का समावेश कर प्रतिदर्श बुनकरों से जानकारी एकत्रित की गई । सर्वेक्षण से ज्ञात तथ्यों को एकत्रित एवं सारिणी बद्ध करके विश्लेषण किया गया है ।

बुनकरों के व्यक्तिगत आंकड़ों का विश्लेषण :-

पूर्व अध्याय 5 में आयु समूह के अनुसार प्रतिदर्श बुनकर इकाइयों की संख्या को सारिणी क्रमांक 2 में सूचीबद्ध करके विश्लेषित किया गया है ।

उत्पाद का विक्रय :-

अध्ययन क्षेत्र के बुनकर अपने उत्पाद का विक्रय किस प्रकार से करते हैं यह जानने के लिए प्रतिदर्श बुनकर ईकाइयों से सर्वेक्षण में प्राप्त जानकारी, सारणीमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण इस प्रकार है :-

सारिणी क्रमांक - 14

(बुनकरों के उत्पाद की विक्रय-तरीका)

क्र.	विक्रय - तरीका	प्रतिदर्श बुनकर की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	उत्पादन स्थल से सीधा	300	152	50.66
2	सहकारी समितियों को	300	92	30.66
3	थोक विक्रेताओं को	300	53	17.66
4	स्थानीय बाजार में	300	67	22.33
5	फेरीवालों /हॉकर्स के द्वारा	300	125	41.66
6	अन्य तरीकों से	300	33	11

उपर्युक्त सारिणी में दर्शित विक्रय के तरीकाओं को सर्वे प्रश्नावली अनुसूची में

सम्मिलित कर प्रतिदर्श बुनकर ईकाइयों से यह जानने का प्रयास किया गया कि वे वर्तमान में अपने उत्पाद को किन-किन रीतियों से बिक्री कर रहें हैं। उक्त सारिणी के बिश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 152 (50.66%) उत्तरदाताओं ने उत्पादन स्थल से सीधे बिक्री करना बतलाया है। इसी प्रकार 92 (30.66%) उत्तरदाताओं ने सहकारी समितियों को, 53 (17.66%) उत्तरदाताओं ने थोक विक्रेताओं को, 67 (22.33%) उत्तरदाताओं ने स्थानीय बाजार में, 125 (41.66%) उत्तरदाताओं ने फेरीवालों /हॉकर्स के द्वारा एवं 33 (11%)उत्तरदाताओं ने अन्य तरीकों से अपने उत्पाद का विक्रय हेतु तरीका अपनाये हुए हैं।

अतः विश्लेषण से यह विदित होता है कि अध्ययन क्षेत्र के बुनकर (कोष्टा) समुदाय के द्वारा अपने उत्पाद का विक्रय अधिकतर उत्पादन स्थल से करते हैं जो विक्रय रीति के क्रम में प्रथम पर है। इसी प्रकार दूसरे क्रम में हॉकर्स के द्वारा, तृतीय क्रम में सहकारी समितियों के द्वारा, चतुर्थ क्रम में स्थानीय बाजार में, पांचवे क्रम में थोक विक्रेताओं को एवं छठवें क्रम में विविध /अन्य तरीकाओं को प्रतिदर्श बुनकरों के द्वारा उत्पाद के विक्रय हेतु अपनाना परिलक्षित हुआ है।

वित्तीय स्त्रोत

अध्ययन क्षेत्र के बुनकर (कोष्टा)समुदाय में निजी बुनकरों की आर्थिक स्थिति दयनीय है। चाहे कोई भी कार्य हो वित्त की जरूरत पड़ती ही है। रायगढ़ क्षेत्रीय बुनकर समुदाय अपने पारंपरिक बुनाई कार्य हेतु आवश्यक वित्त का प्रबंध किन से करते हैं अर्थात् उनके वित्तीय स्त्रोंत क्या हैं जिनसे वे वित्तीय सहायता प्राप्त करते हैं। इसके बारे में सर्वेक्षण से ज्ञात तथ्यों का उल्लेख एवं विश्लेषण निम्नानुसार है :-

सारिणी क्रमांक - 15

(बुनकर समुदाय के वित्तीय सहायता प्राप्त करने के स्त्रोत)

क्र.	स्त्रोत	प्रतिदर्श बुनकरों की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	केन्द्र सरकार	300	12	3%
2	छ.ग. शासन, ग्रामोद्योग विभाग	300	36	12%
3	हथकरघा निगम	300	24	8%
4	सहकारी समिति	300	62	20.66%
5	बैंक	300	91	30.33%
6	अन्य स्त्रोत (रिश्तेदारों मित्रों, महाजनों, व्यवसायियों आदि)	300	270	90%

उपर्युक्तानुसार सर्वेक्षण से प्राप्त समंको से प्रदर्शित होता है कि अध्ययन क्षेत्र के बुनकरों को शासकीय सहायता अत्यल्प ही मिलता है । प्रत्यक्ष चर्चा में बुनकरों ने इसके प्रमुख कारणों में शासकीय वित्तीय अनुदान/सहायता प्राप्त की जटिल प्रक्रिया एवं समय पर जानकारी की अभाव को दोषी मानते हैं । संबंधित शासकीय कार्यालय व विभागीय मापदण्ड के अनुसार आवश्यक औपचारिक कागजात को किसी प्रकार पूर्ण कर बार-बार कार्यालयों का चक्कर लगाने के बावजूद भी उचित सरकारी सहायता उन्हें प्राप्त नहीं हो पाने से बुनकरों में हताशा इस संबंध में परिलक्षित हुई है । कुछ बुनकर आगे यह भी बतलाते हैं कि अपने बुनाई कार्य को छोड़कर वे सरकारी वित्तीय सहायता प्राप्ति हेतु भाग-दौड़ करने से उनके कार्य में व्यवधान उत्पन्न हो जाती है और इन सभी कारणों से वे अपने निकट के व्यवसायियों, मित्रों रिश्तेदारों तथा महाजनों पर वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए अत्यधिक निर्भर रहतें है ।

सर्वे से मिली जानकारी के मुताबिक अध्ययन क्षेत्र के कुल 300 प्रतिदर्श बुनकरों में से 270 (90%) उत्तरदाताओं ने वित्तीय स्त्रोत के लिए अन्य स्त्रोत पर निर्भर होना बतलाया

है। इसी प्रकार क्रमशः 91 (30.33%) उत्तरदाताओं ने बैंक, 62(20.66%) उत्तरदाताओं ने सहकारी समिति, 36 (12%) उत्तरदाताओं ने ग्रामोद्योग विभाग, छ.ग. शासन, 24 (8%)उत्तरदाताओं ने हथकरघा निगम एवं 09 (3%) बुनकर उत्तरदाताओं ने केन्द्र सरकार से वित्तीय सहायता प्राप्त के स्त्रोत को प्रदर्शित किया है ।

सूचना आवश्यकताएं

प्रस्तुत शोध अध्ययन में लक्ष्यित उद्देश्य के पूर्णता के दृष्टिगत बुनाई व्यवसाय से संबंधित 15 आधारीय विषय क्षेत्र को चिन्हित कर प्रश्नावली अनुसूचि में उल्लेखित करके सर्वेक्षण द्वारा अध्ययन क्षेत्र के बुनकर (कोष्टा) समुदाय की सूचना आवश्यकताएं ज्ञात की गई हैं, जिन पर वे अपने बुनाई कार्य के दरमियान बार-बार सूचना प्राप्त करने की आवश्यकता महसूस करते है ।

शोधार्थी को सर्वेक्षण से मिली जानकारियों का सारिणीबद्ध प्रदर्शन निम्नानुसार करते हुए एकत्रित समंको का विश्लेषण नीचे किया जा रहा है :-

सारिणी क्रमांक -16

[बुनकर (कोष्टा)समुदाय की सूचना आवश्यकताएं]

क्र.	विषय क्षेत्र	प्रतिदर्श बुनकर की संख्या	उत्तरदाताओं की संख्या	उत्तरदाताओं का प्रतिशत
1	कच्चा माल	300	280	93.33
2	रूपांकन	300	242	80.66
3	रंगाई	300	178	59.33
4	प्रक्रिया	300	63	21
5	बाजार मांग	300	269	89.66
6	उपकरण और औजार	300	165	55
7	धागा कटाई	300	08	2.66
8	कैमबंध (टाई वर्क)	300	35	11.66
9	विक्रय स्त्रोत	300	227	75.66
10	बुनाई प्रशिक्षण	300	249	83
11	शासकीय सहायता	300	274	91.33
12	गुणवत्ता नियंत्रण	300	39	13
13	विज्ञापन	300	28	9.33
14	निर्यात	300	93	31
15	एकस्व (पेटेन्ट)	300	14	4.66

उपर्युक्त सर्वेक्षण सारिणी के समंकों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के बुनकर (कोष्टा) समुदाय अपने बुनाई व्यवसाय के लिए कच्चा माल एवं शासकीय सहायता के बारे में सर्वाधिक सूचनाएं आवश्यकताएं प्राप्त करना चाहतें है । सर्वेक्षित आंकड़े प्रदर्शित करता है कि प्रतिदर्श बुनकर में से कच्चा माल एवं शासकीय सहायता पर सूचना आवश्यकताएं को क्रमशः 280 (93.33%) एवं 274 (91.33%)उत्तरदाता बुनकरों ने सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय क्रम में प्रश्नावली अनुसूची में व्यक्त किया है । तीसरा और चौथे क्रम पर बाजार मांग एवं बुनाई प्रशिक्षण पर क्रमशः 269 (89.66%) एवं 249 (83%) उत्तरदाताओं के द्वारा सूचना आवश्यकता चाही गई है । अतः समंकों के विश्लेषण करने पर यह परिलक्षित हुआ है कि अध्ययन क्षेत्र के बुनकर (कोष्टा) समुदाय बुनाई व्यवसाय को उत्कृष्ट व उन्नत बनाने के लिए शासकीय सहायता की मदद से सूचनाएं प्राप्त करना चाहते हैं ताकि वे उपभोक्ताओं के बदलती हुई और आवश्यकताओं का सामना कर सकें ।

इसी प्रकार रूपांकन तथा उत्पादन के विक्रय स्त्रोत पर क्रमशः 242 (80.66%) एवं 227 (75.66%)उत्तरदाताओं के द्वारा सूचना आवश्यकता हेतु इच्छा व्यक्त की गई है जो सूचना आवश्यकता के विश्लेषण में क्रमशः पांचवे व छठवें क्रम में हैं । रंगाई एवं उपकरण तथा औजार पर उत्तरदाताओं की संख्या क्रमशः 178 (59.33%) एवं 165 (55%) है जो कि वांछित सूचना आवश्यकता के क्रम में सातवां एवं आठवें पर है ।

इसके साथ-साथ निर्यात पर 93 (31%), प्रक्रिया पर 63 (21%), गुणवत्ता नियंत्रण पर 39 (13%), कैमबंध (टाई वर्क) पर 35 (11.66%), विज्ञापर पर 28 (9.33%), एकस्व पर 14 (4.66%) तथा धागा कटाई पर 08 (2.66%) बुनकर उत्तरदाताओं के द्वारा सूचना आवश्यकता प्रतिपादित की गई है । इससे अनुमान लगाया जाता है कि बुनकर समुदाय इनसे संबंधित पहलूओं पर सूचना आवश्यकताएं कम महसूस करते हैं यद्यपि बुनाई व्यवसाय के दृष्टि कोण से इन पहलूओं का महत्व कमतर नहीं है तथापि सर्वेक्षण के दरमियान प्रतिदर्श बुनकरों से प्रत्यक्ष चर्चा में इस बात की जानकारी मिली कि वे व्यवसायिक महत्व के इन पहलूओं पर अनभिज्ञ हैं ।

---000---